07 मार्च, 2016 : हरिहर आश्रम, कनखल, हरिद्वार में महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर देश-विदेश से आये साधकों से जूनापीठाधीश्वर आचार्यमहामण्डलेश्वर पूज्य स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज ने कहा कि आप उदार बनें, पारदर्शी बनें । आनन्द की उच्चता का प्रसव ही उत्सव है। आनन्द प्रसव उत्सवः। शाक्त ग्रन्थ 'त्रिपुरा रहस्य' औदार्य का प्रसव ही उत्सव है। जब बहुत कुछ देने के लिए आपके पास हो आदर हो, उपहार हों, तब आप में स्वाभाविक स्वीकृति होनी चाहिये... आत्मवत् सर्वभूतेषु की भावना। सब मेरे हिस्से हैं, लोग, निहारिकायें, अम्बर, झील, जल-जलाशय, पशु-पक्षी, वृक्ष, पर्वत, सभी भूमि.... सब मेरे ही हिस्से हैं। जब ऐसा भाव आपके भीतर जगे, जन्म ले, तब इसे ही त्रिपुरा रहस्य में 'उत्सव' कहा गया है।

उदार कौन? विष्णु उदार हैं। भृगु के पदप्रहार से भी जिसमें किंचित मात्र भी क्रोध नहीं आता, अपमान अनुभव नहीं होता, पद (पैर) भी मैं और मारने वाला भी मैं, और यह मुझे ही लगा। जब इतनी उदारता आपके भीतर आ जायेगी, आपकी उदारता अखंड, अनंत, व्याप्ति सर्वव्यापक हो जाए तब उसे ही उत्सव कहेंगे। उदारता वैष्णव गुण है।

पूरी धरती पर प्रकृति का उत्सव चल रहा है। प्रकृति में रोज उत्सव हैं। जब भक्ति जगती है तब औदार्य आता है। जो जितना उदार है, वह प्रभु के उतने ही निकट है। मौन और जप में रहिये। पारदेश्वर महादेव उत्सव मूर्ति हैं। उदारता का प्रसव, प्रसन्नता का प्रसाद ही उत्सव है।

परमात्मा प्रकट होने को व्याकुल है। सारे देवता प्रकट होना चाहते हैं, पत्थर से बाहर आना चाहते हैं, उसके लिए आपसे अपेक्षित है - श्रेष्ठता, पावित्र्य, उदारता जैसे सद्गुण। हम जितना विनम्र होंगे प्रभु उतना ही हममें प्रकट होंगे।
महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर दिनभर शास्त्रीय भजनों का गायन हुआ। मृत्यंजय महादेव पर जलाभिषेक, पारदेश्वर महादेव को प्रणामांजलि, रुद्राक्ष की परिक्रमा करते भक्तों ने सुस्वाद प्रसाद ग्रहण किया।

इस अवसर पर सुप्रीम कोर्ट के माननीय न्यायमूर्ति, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान सपरिवार के साथ, उत्तर प्रदेश के श्री अरविन्द सिंह विष्ट, संस्था के न्यासीगण एवं साधकों का अपार समूह पूजन हेतु पधारे हैं।

* * *